भारत चीन संबंधों का विवेचनात्मक अध्ययन

विशेषतः सन् 2000 से 2022

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

राजनीति विज्ञान में

पी.एच.डी की उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशक

JV'n डॉ. एल.के. शर्मा

राजनीति विज्ञान विभाग

शोधार्थी

JV'n विकास सेहरा

JVR-I/22/10015

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

2023

विषय सूची

क्र. सं.	विषय	पृ.सं.
1.	प्रस्तावना	2—12
2.	विषय एवं अध्ययन क्षेत्र	13
3.	अध्ययन की रूपरेखा	14
4.	शोध परिकल्पना	15
5.	शोध प्रश्न	16
6.	शोध उद्देश्य	17
7.	शोध प्रविधि	18
8.	साहित्य समीक्षा	19—23
	संदर्भ ग्रन्थ सूची	24—28

भारत चीन संबंधों का विवेचनात्मक अध्ययन विशेषतः सन् 2000 से 2022

1. प्रस्तावना

चीन विश्व का महानतम एवं प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है जिसका इतिहास 3000 वर्ष पुराना है। भारत और चीन पड़ौसी देश है तथा प्राचीनकाल से दोनों देशों के कूटनीतिक व सांस्कृतिक सम्बन्ध रहे हैं। भारत और चीन के संबंध विश्व सबसे महत्वपूर्ण एवं जटिल द्विपक्षीय संबंध है। दोनों देशों के व्यापारिक अंतनिर्भरता तथा एशिया महाद्वीप में एकल महाशक्ति के रूप उभरने की आकांक्षा दोनों में प्रतिस्पर्धा को बरकरार रखती है।

भारत चीन संबंधों में सहयोग व संघर्ष दोनों बिन्दुओं को चिह्नित किया जा सकता है। इन दोनों प्राचीन सभ्यताओं ने सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक आदान–प्रदान को बनाए रखा है। जबकि समय–समय पर क्षेत्रीय विवादों व सैन्य टकरावों ने दोनों देशों के बीच तनावपूर्ण स्थिति भी देखी है। ऐतिहासिक संदर्भ को समझना भारत और चीन के बीच

आधुनिक समय के संबंधों की जटिलताओं के विश्लेषण के लिए आधार प्रदान करता है।

औपनिवेशिक विरासत एवं स्वतंत्रता आंदोलन

औपनिवेशिक काल के दौरान, भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रभुत्व और चीन के आंतरिक संघर्षों के कारण भारत और चीन के राजनयिक संबंध सीमित थे हालांकि भारतीय राष्ट्रवादियों और चीनी क्रान्तिकारियों के बीच समर्थन व एकजुटता के भाव थे। भारत ने स्वतंत्र होते ही चीन राजनयिक सम्बन्ध स्थापित किये तथा भारत चीन को मान्यता देने वाला प्रथम देश बना।

औपनिवेशिक युग के दौरान भारत चीन दोनों ही पश्चिमी साम्राज्यवाद के अधीन थे भारत की स्वतंत्रता 1947 तथा चाइना 1949 में साम्यवादी गणराज्य चीन के रूप में उभरा।

प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व वाली कांग्रेसी सरकार ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई तथा चीन से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने पर सहमति जताई। इसी चलते दोनों देशों के बीच 954 में पंचशील समझौता सम्पन्न हुआ जिसमें शांतिपूर्ण सहअस्तित्व, अनाक्रमण एक–दूसरे की सम्प्रभुता एकता अखण्डता का सम्मान करना तथा

आपसी आंतरिक मामलों में अहस्तक्षेप की अपनाना शामिल था। पंचशील समझौता भारत चीन संबंधों में मील का पत्थर साबित हुआ।

अतिक्रमण नहीं करेंगे, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की नीति अपनायेंगे, एक दूसरे पर आक्रमण नहीं करेंगे तथा आपस में एक–दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे।

पंचशील समझौते के समय दोनों देशों में हिन्दी चीनी भाई भाई के नारे दिये गये, भारत के प्रधानमंत्री व चीन के प्रधानमंत्री चाउ एन ताइ की भारत यात्रा हुई। चीन द्वारा तिब्बत पर अवैध रूप से कब्जा कर लेना तथा तिब्बती शरणार्थियों को भारत जगह देने पर चीन 1962 में भारत पर आक्रमण कर दोनों देशों के सीमा विवाद का तनाव को बढ़ावा दिया।

1970–80 के दशक में विदेश मंत्री अटल बिहारी की चीन यात्रा ने दोनों देशों के संबंधों में बहाली के प्रयास किये उसके बाद 1988 में राजीव गांधी यात्रा से दोनों देशों के संबंध सामान्य होने तथा द्विपक्षीय व्यापारिक समझौते हुए तथा 1991 के आर्थिक सुधारों से भारत ने व्यापारिक प्रतिबंधों में ढील दी तथा चीन ने आर्थिक सुधारों को अपनाया।

चीनी विनिर्मित वस्तुओं तथा भारतीय कच्चे माल की मांग के कारण द्विपक्षीय व्यापार तेजी से विस्तार हुआ। हालांकि व्यापारिक संतुलन चीन के पक्ष में होने लगा। भारत को चीन के साथ बढ़ते व्यापार घाटे का सामना करना पड़ा। सन् 2000 के दशक की शुरूआत, द्विपक्षीय व्यापार में वृद्धि बढ़ती आर्थिक सम्पूरकता सन् 2005 में व्यापार 10 अरब डॉलर पार कर गया तथा 2012 में 70 अरब डॉलर पहुंच गया, चीनी सामान विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी और उपभोक्ता उत्पादों भारतीय बाजार में बाढ़ ला दी है।

बाद के वर्षों में भारत–चीन के बीच अविश्वास उनके संबंधों की एक प्रमुख विशेषता बनी रही जिसने अब सारी चीन और अरूणाचल प्रदेश के क्षेत्र प्रमुख विवाद के प्रमुख मुद्दे उभरकर सामने आए। जिसके कारण 1962 में एक तीव्र सैन्य संघर्ष हुआ जिसके परिणामस्वरूप दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंध तनावपूर्ण हो गए।

हालांकि भारत एवं चीन दोनों ने अपनी साझा सीमाओं और बढ़ती आर्थिक परस्पर निर्भरता के कारण स्थिर संबंध बनाए रखने के महत्व को स्वीकार किया। 1980 के दशक में प्रधानमंत्री राजीव गांधी की चीन यात्रा एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर रही जिसके कारण दोनों देशों के बीच बढ़ते आर्थिक सहयोग और सांस्कृतिक आदान–प्रदान का मार्ग

प्रशस्त हुआ तथा 2000 के दशक में भारत और चीन के संबंधों को और सामान्य बनाने और द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा देने का प्रयास किया। दोनों देशों ने संवाद और सहयोग के लिए कई तंत्रों की स्थापना की जैसे कि भारत–चीन संयुक्त आर्थिक समूह, रणनीतिक आर्थिक संवाद तथा सीमा विवाद सम्बन्धित मुद्दे के समाधान हेतु प्रतिविधि वार्ता आदि।

हालांकि इन प्रयासों के बावजूद दोनों देशों के तनाव बना हुआ है मुख्यतः सीमा विवाद, भारत में दलाई लामा का निवास, पाकिस्तान–चीन गठबन्धन, डोकलाम विवाद, गलवान घाटी में संघर्ष जैसी घटनाओं ने दोनों देशों के मध्य तनाव को बढ़ावा दिया है। दोनों देश सैन्य निर्माण और आधुनिकीकरण के लिए निरन्तर प्रयासरत है जिसके परमाणु क्षमता को विकसित करना भी शामिल है जिसमें सुरक्षा गतिशीलता और भी जटिल हो गई है।

अतः ये भारत–चीन संबंधों के ऐतिहासिक पहलू में सहयोग, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, क्षेत्रीय संघर्ष तथा भू–राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता बनी हुई है।

आर्थिक संबंध :–

भारत–चीन ऐतिहासिक रूप से सिल्क रोड़ के माध्यम से लम्बे समय से सांस्कृतिक व वयापार रूप में जुड़े हुए थे।

सिल्क रोड़ ने दो सभ्यताओं को जोड़ने वाले एक महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग के रूप में कार्य किया जिससे वस्तुओं, विचारों और धार्मिक विश्वासों के आदान–प्रदान में सहायता मिली। ढौल धर्म भारत में उत्पन्न हुआ चीन में फैल गया, चीनी संस्कृति और दर्शन पर स्थायी प्रभाव छोड़ गया।

प्राचीन ग्रंथ जैसे चीन बौल तीर्थयात्रियों के भारत आने के वृतांत दोनों देशों के बीच घनिष्ठ संबंधों को उजागर करते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रारम्भिक दशकों में दोनों देशों के मध्य राजनीतिक तनाव और सीमा विवादों के कारण भांरत चीन के बीच आर्थिक संबंध अपेक्षाकृत सीमित थे तथा दोनों देशों ने आत्मनिर्भरता और घरेलू विकास पर ध्यान केन्द्रित किया 1962 के भारत–चीन युद्ध ने दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों को और तनावपूर्ण बना दिया।

1970 के दशक में दोनों देशों ने अपने आर्थिक हितों को ध्यान में रखते हुए संबंधों को सामान्य बनाने का कूटनीतिक प्रयास किए जिससे

भारत–चीन के बीच व्यापार और आर्थिक सहयोग की बहाली हुई द्विपक्षीय व्यापार फिर से शुरू किया गया जिसमें चाय, मसाले, वस्त्र जैसी वस्तुओं का आदान–प्रदान होने लगा।

1990 के दशक में उदारीकरण के परिणामस्वरूप भारत चीन के बीच आर्थिक संबंधों में एक नया मोड आया। दोनों देशों में आर्थिक सुधारों तथा उदारीकरण के उपायों को अपनाने का प्रयास किया जिससे व्यापार और निवेश में वृद्धि हुई। चीनी विनिर्मित वस्तुओं और भारतीय कच्चे माल की मांग के कारण द्विपक्षीय व्यापार का तेजी से विकास हुआ हालांकि व्यापार असंतुलन उभरने लगा, भारत को चीन के साथ व्यापार घाटे का सामना करना पड़ा।

हालांकि कि दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों को चिह्नित किया गया है जिसमें निवेश, संयुक्त उद्यम और सहयोग को शामिल करने के लिए व्यापार से परे आर्थिक संबंधों का विस्तार हुआ। भारत में चीनी निवेश में वृद्धि हुई। विशेष रूप से बुनियादी ढांचा परियोजनाओं विनिर्माण और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में।

दोनों देशों के बीच प्रौद्योगिकी की बढ़ती मांग ने भारतीय आई.टी. और सॉफ्टवेयर सेवा कम्पनियों में चीन में महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज की है।

हालांकि दोनों देशों के द्विपक्षीय व्यापार में तेजी से विस्तार में कई नई चुनौतियों और व्यापार विवादों को जन्म दिया है। भारत में व्यापार असंतुलन, बाजार पहुंच के मुद्दों, गैर–टैरिफ बाधाओं और चीनी सामान भी डपिंग के कारण दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

कूटनीतिक संबंध

1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद भारत चीन ने 950 में औपचारिक रूप से कूटनीतिक संबंधों की शुरूआत की। भारत ने 1950 में चीन की वैध सरकार के रूप में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना जनवादी गणतंत्र चीन को मान्यता प्रदान की। भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और चीन के अध्यक्ष माओत्से तुंग ने गैर सरकारी दृष्टिकोण साझा किया। उपनिवेशवादी–विरोधी विचारधारा को दोनों देशों ने सहयोग को कूटनीतिक संबंधों का आधार बनाया। हालांकि विभिन्न कारकों के कारण 950 के दशक के अंत में भारत चीन संबंध

बिगड़ने लगे, दोनों देशों के बीच विवाद का मुद्दा सीमा विवाद था जिसको लेकर दोनों पक्षों में 1962 में सैन्य संघर्ष हुआ परिणामस्वरूप चीन की जीत हुई। कई दशकों तक दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंध तनावपूर्ण रहे।

बाद के वर्षों में भारत–चीन राजनयिक संबंध सीमित थे। अविश्वास दोनों देशों के संबंधों में बना रहा। बीच–बीच में सीमा संघर्ष चलता रहा, विवादित क्षेत्रों में अक्साई चिन अरूणाचल प्रदेश का पूर्वी भाग थे।

हालांकि भारत चीन दोनों ने अपनी साझा सीमाओं और बढ़ती आर्थिक परस्पर निर्भरता के कारण संबंधों के बनाए रखने के महत्व को स्वीकार किया गया। 1980 के दशक में दोनों देशों ने संबंधों को सुधारने के लिए कदम उठाए, 1988 में प्रधानमंत्री राजीव गांधी की चीन यात्रा एक महत्वपूर्ण कदम रहा, इस यात्रा ने दोनों देशों के बीच बढ़ते आर्थिक सहयोग व सांस्कृतिक आदान–प्रदान का मार्ग प्रशस्त किया।

वास्तविक नियंत्रण रेखा पर शांति बनाये रखने के लिए 993 में समझौता हुआ, इस समझौते का उद्देश्य सीमा पर होने वाली झड़पों को रोकना तथा विवादित क्षेत्रों में शांति बनाए रखना था।

सन् 2000 के दशक की शुरूआत में भारत चीन संबंधों को सामान्य बनाने और द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा देने के प्रयास किये गये। दोनों देशों ने संवाद और सहयोग के लिए कई तंत्रों की स्थापना की जैसे भारत चीन संयुक्त आर्थिक समूह, रणनीतिक आर्थिक संवाद, सीमा मुद्दे को सम्बोधित करने के लिए विशेष प्रतिनिधि वार्ता।

सन् 2014 में भारत के उपराष्ट्रपति फी बीजिंग यात्रा चीन के ग्रेट हॉल में पंचशील संधि पर हस्ताक्षर किये गये। सन् 207 में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने कहा कि चीन पंचशील के पांच सिद्धान्तों से मार्गदर्शन लेने के लिए भारत के साथ काम करने को तैयार है।

हालांकि इन प्रयासों के बावजूद तनाव समय–समय पर फिर सामने आया है। विशेष रूप से सीमा विवाद, भारत में दलाई लामा की उपस्थिति तथा पाक चीन संबंधों को लेकर भारत आपत्ति जता रहा है। 2017 में डोकलाम विवाद, 2020 में गालवान घाटी सीमा संघर्ष जैसी घटनाओं ने दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ा दिया है। सितम्बर 2021 में मेरी जानकारी के अनुसार भारत चीन राजनयिक संबंध जटिल बने हुए हैं। सहयोग, प्रतिस्पर्धा और सामयिक टकराव का मिला जुला रूप देखा जा सकता है। स्थिरता बनाए रखने और संबंधों को बेहतर बनाने के

प्रयास जारी है। लेकिन लंबे समय से चले आ रहे सीमा विवाद संबंधी चुनौती बने है।

2. विषय एवं अध्ययन क्षेत्र

विषय : भारत चीन संबंधों का विवेचनात्मक अध्ययन विशेषतः सन् 2000 से 2022

अध्ययन क्षेत्र

भारत चीन संबंधों का ऐतिहासिक सांस्कृतिक राजनैतिक– कूटनीतिक आयामों का विवेचनात्मक अध्ययन करना तथा दोनों देशों के मध्य उत्पन्न होने वाले प्रमुख विवादों की उनके समाधान हेतु कूटनीतिक प्रयासों का अध्ययन करना।

भारत चीन संबंधों में उत्पन्न होने वाले प्रमुख विवादों एवं तनावों आदि की पहचान करना तथा उनके समाधान हेतु किये गये कूटनीतिक प्रयासों का अध्ययन करना।

भारत की विदेश नीति के प्रमुख सिद्धान्तों का चीन के संदर्भ में अध्ययन करना।

3. अध्ययन की रूपरेखा

प्रस्तावित शोध के व्यवस्थित अध्ययन हेतु इसको भागों में बांटा जाएगा –

1. परिचय
2. भारत–चीन संबंधों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
3. भारत–चीन कूटनीतिक संबंध
4. भारत–चीन आर्थिक सम्बन्ध
5. निष्कर्ष

4. शोध परिकल्पना

1. भारत चीन संबंधों में सीमा–विवाद और क्षेत्रीय तनाव द्विपक्षीय संबंधों में टकराव के प्रमुख कारक रहे हैं।

2. भारत–चीन के मध्य भू–राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता एवं आकांक्षाओं ने क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रतिस्पर्धा एवं सहयोग का जटिल मिश्रण बना दिया है।

3. भारत–चीन संबंधों में आपसी टकराव एवं चुनौतियों के बावजूद आपसी आर्थिक हितों के कारण स्थिर संबंध बनाये रखने के महत्व को पहचानते है।

5. शोध प्रश्न

1. भारत–चीन के बीच विवाद के बिन्दुओं की पहचान करना ?
2. भारत–चीन विवादों के समाधान हेतु अपनायी जाने वाली तकनीकी एवं रणनीतियों का अध्ययन ?
3. भारत–चीन के बीच सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों की पहचान करना ?
4. चीन के संदर्भ में भारत के व्यापारिक हितों का अध्ययन करना ?
5. भारत के चीन के प्रति विदेश नीति में प्रमुख सिद्धान्तों का मूल्यांकन करना ?

6. शोध उद्देश्य

1. भारत–चीन संबंधों का ऐतिहासिक औपनिवेशिक संबंधों का अध्ययन करना।
2. भारत–चीन संबंधों के बीच उत्पन्न होने वाले विवादों का अध्ययन करना।
3. भारत चीन संबंधों में विवादों के समाधान हेतु किये गये प्रयासों युक्तियों का अध्ययन करना।
4. भारत चीन संबंधों में सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों की पहचान करना।
5. भारत चीन व्यापारिक असंतुलन उत्पन्न होने वाले कारकों का पता लगाना।

7. शोध प्रविधि :-

प्रस्तावित शोध प्रविधि के अन्तर्गत ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक व वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया जायेगा। तथा इसके लिए आंकडों की प्राप्ति हेतु प्राथमिक डेटा तथा द्वितीयक आंकडों का उपयोग किया जाएगा तथा डेटा प्राप्ति हेतु पुस्तकों, रिसर्च पेपर, रिपोर्ट, लेख, पत्र–पत्रिकाएं, पाण्डुलिपि, पूर्व में हुए शोध अध्ययन आदि का उपयोग किया जाएगा।

8. साहित्य समीक्षा

इस साहित्य समीक्षा का उद्देश्य उन प्रमुख पुस्तकों का व्यापक अवलोकन प्रदान करना है जिन्होंने भारत–चीन संबंधों को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। चयनित पुस्तकें विभिन्न दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करती हैं और द्विपक्षीय संबंधों के विभिन्न पहलुओं को कवर करती हैं, जिसमें ऐतिहासिक संदर्भ, राजनीतिक गतिशीलता, आर्थिक संबंध, रणनीतिक चिंताएं और क्षेत्रीय निहितार्थ शामिल हैं। इन प्रभावशाली कार्यों की जांच करके, यह समीक्षा उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली मूल्यवान अंतर्दृष्टि और भारत–चीन संबंधों पर व्यापक चर्चा में उनके योगदान को उजागर करना चाहती है।

टीवी पॉल (2017) द्वारा ''भारत–चीन संबंधः एक बहुध्रुवीय दुनिया में संसाधनों की राजनीति, पहचान और प्राधिकरण'' यह पुस्तक भारत–चीन संबंधों को आकार देने में संसाधनों, पहचान और अधिकार के बीच जटिल परस्पर क्रिया की पड़ताल करती है। विवाद और सहयोग के स्रोत के रूप में पानी और ऊर्जा सहित प्राकृतिक संसाधनों की भूमिका की जांच करता है। द्विपक्षीय संबंधों पर राष्ट्रीय पहचान और शक्ति गतिशीलता के प्रभाव में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

मोहन मलिक (2011) द्वारा ''चीन और भारतः महान शक्ति प्रतिद्वंद्वी'' सैन्य क्षमताओं, क्षेत्रीय विवादों और क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए चीन और भारत के बीच सामरिक प्रतिद्वंद्विता का विश्लेषण करता है। रिश्ते की प्रतिस्पर्धी प्रकृति में योगदान करने वाले ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और वैचारिक कारकों की पड़ताल करता है। क्षेत्र में शक्ति संतुलन पर आर्थिक और सैन्य विकास के प्रभाव की एक महत्वपूर्ण परीक्षा प्रदान करता है।

रॉबिन मेरेडिथ (2008) द्वारा ''द एलिफेंट एंड द ड्रैगनः द राइज ऑफ इंडिया एंड चाइना एंड व्हाट इट मीन्स फॉर ऑल अस'' भारत और चीन के आर्थिक उत्थान और शक्ति के वैश्विक संतुलन के लिए उनके प्रभावों की पड़ताल करता है। विभिन्न क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच प्रतिस्पर्धा और संभावित सहयोग की जांच करता है।

जोनाथन होलस्लाग (2010) द्वारा ''चीन और भारतः शांति की संभावनाएं'' शांति और सहयोग की क्षमता पर ध्यान केंद्रित करते हुए चीन और भारत के बीच सामरिक प्रतिद्वंद्विता का विश्लेषण करता है। द्विपक्षीय संबंधों को प्रभावित करने वाले ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भू–राजनीतिक कारकों की पड़ताल करता है।

कांति बाजपेयी, सेलिना हो और मंजरी चटर्जी मिलर (2019) द्वारा संपादित ''इंडिया–चाइना रिलेशंसः एन एजेंडा फॉर एशियन सेंचुरी'' राजनीति, अर्थशास्त्र, सुरक्षा और संस्कृति सहित भारत–चीन संबंधों के प्रमुख आयामों का व्यापक अवलोकन प्रदान करता है। सहयोगी और स्थिर द्विपक्षीय संबंधों को आकार देने में चुनौतियों और अवसरों की जांच करता है।

रॉबिन मेरेडिथ (2008) द्वारा ''द एलिफेंट एंड द ड्रैगनः द राइज ऑफ इंडिया एंड चाइना एंड व्हाट इट मीन्स फॉर ऑल अस'' भारत और चीन के आर्थिक उत्थान और शक्ति के वैश्विक संतुलन के लिए उनके प्रभावों की पड़ताल करता है। विभिन्न क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच प्रतिस्पर्धा और संभावित सहयोग की जांच करता है।

जोनाथन होलस्लाग (2010) द्वारा ''चीन और भारतः शांति की संभावनाएं'' शांति और सहयोग की क्षमता पर ध्यान केंद्रित करते हुए चीन और भारत के बीच सामरिक प्रतिद्वंद्विता का विश्लेषण करता है। द्विपक्षीय संबंधों को प्रभावित करने वाले ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भू–राजनीतिक कारकों की पड़ताल करता है।

अल्फ्रेड पी. रुबिन (2018) द्वारा ''द चाइना–इंडिया बॉर्डरः द ओरिजिन ऑफ द डिस्प्यूटेड बाउंड्रीज'' चीन और भारत के बीच सीमा विवादों की ऐतिहासिक उत्पत्ति की पड़ताल करता है। परस्पर विरोधी क्षेत्रीय दावों और द्विपक्षीय संबंधों पर उनके प्रभाव का कानूनी और ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

नेविल मैक्सवेल द्वारा ''भारत का चीन युद्ध'' (1970) 1962 के चीन–भारतीय युद्ध का गहन विश्लेषण प्रदान करता है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, राजनीतिक संदर्भ और सैन्य गतिशीलता की जांच करता है जिससे संघर्ष हुआ।

सुब्रमण्यम स्वामी द्वारा ''रीसेटः रीगेनिंग इंडियाज इकोनॉमिक लिगेसी'' (2015) चीन के साथ अपने संबंधों के संदर्भ में भारत की आर्थिक चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा करता है। भारत के आर्थिक विकास और प्रतिस्पर्धात्मकता को पुनर्जीवित करने के लिए रणनीतियों की पड़ताल करता है।

बर्टिल लिंटनर (2017) द्वारा ''चीन का भारत युद्धः दुनिया की छत पर टकराव का कोर्स'' 1962 के चीन–भारतीय युद्ध और द्विपक्षीय संबंधों के लिए इसके दीर्घकालिक प्रभावों पर ध्यान केंद्रित करता है। संघर्ष और

क्षेत्रीय गतिशीलता पर इसके प्रभाव का एक ऐतिहासिक विवरण प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Abhilash Roy Nalpatham Kalam. (2012). Cooperation without Trust: India-China Relations Today. Heinrich Boll Stifstung Institute. Working Paper.

2. Arvind Kumar (2010). Future of India – China Relations: Challenges and Prospects. UNISCI. 24, 187-196.

3. Arif (2013). A History of Sino-Indian Relation : From conflict to Cooperation. Academic research Journals,130-136.

4. Ahmad, A. and C. Page (2009). Are all Labour Regulations Equal? Evidence from Indian Manufacturing. Journal of Comparative Economics, 37(1), 62-75.

5. Alvarez, R. and S. Claro (2009). David versus Goliath: The Impact of Chinese Competition on Developing Countries. World Development, 37(3), 560-571.

6. Alberto Bagnai (2009). The Role of China in Global External Imbalances: Some Further Evidence. China Economic Review, 20(3), 508-526.

7. Amin, M (2009). Labour Regulation and Employment in India"s Retail Stores. Journal of Comparative Economics, 37 (1), 47-61.

8. Anderson, James and Douglas Marcouiller (2002). Insecurity and the Pattern of Trade: An Empirical Investigation. Review of Economics and Statistics, 84(1), 342-352.

9. Athukorala and Prema Chandra (2009). The Rise of China and East Asian Export Performance: Is the Crowding-Out Fear Warranted? The World Economy, 32(2), 234-266.

10. Bahmani-Oskooee, M., Mohtadi, H., and Shabsigh, G. (1991). Exports, Growth and Causality in LDCs: A Re-Examination. Journal of Development Economics, 36, 405–415.

11. Bair, J. and E. Dussel Peters (2006). Global Commodity Chains and Endogenous Growth: Export Dynamism and Development in Mexico and Hoduras, World Development, 34(2), 203-221.

12. Balance, R. H., H. Forstner and T. Murray (1987). Consistency Tests of Alternative Measures of Comparative Advantage. Review of Economics and Statistics, 69, 157-61.

13. Balassa, B. (1965).Trade Liberalisation and Revealed'' Comparative Advantage. The Manchester School, 33, 99-123.

14.Bangake, C., Eggoh, C. (2011). The Feldstein– Horioka Puzzle in African Countries: A Panel Cointegration Analysis, Economic Modelling, 28, 939-947.

15.Bao, Qun, and Jiayu Yang (2009). Is Financial Development Another Source of Comparative Advantage? Evidence from China. China and World Economy, 17, 15 -34.

16.Barboza, D (2006). Made in China Labels don"t Tell the Whole Story. International Herald Tribune.

17.Birnik, A., Sheth, J. (2010). The Branding Challenges of Asian Manufacturing Firms. Business Horizons, 53(5), 523-532.

18.Bishwanjit (2017). Does India Huge Trade Deficit with China Matter ? E-PAO now the World Knows, 1-2.

19.Bohara, Alok, K., Gawande Kishore and Pablo Sanguinetti (2004) Trade Diversion and Declining Tariffs: Evidence from Mercosur. Journal of International Economics, 65-88.

20.Cai Fang, Du Yang, Nang Neiyon. (2005). Employment and in Quality Outcomes in China. Institute of Population and Labour Economies. Chinese Academy of Social Sciences. Working Paper.

21. Centre for International Development at Harvard University (2015). New 2015 Global Growth Projections Predict China"s Further Slowdown and the Continued Rise of India. The Atlas of Economic Complexity 2015, 1-3.

22. CLAWS (2017). India and China Strategic Implications of the Trade. Centre for Land Warfare Studies, 1-4.

23. Derek Grossman (2017). China Will Regret India"s Entry into the Shanghai Cooperation Organization. The Diplomat. July 17, 2017.

24. Dimaranan Betina et al. (2007). China, India, and the Future of the World Economy: Fierce Competition or Shared Growth. The World Bank Development Research Group Trade Team Policy, 430, 3-10

25. Joginder Singh. (2014). A Comparative Study of India china Bilateral Trade. IRACST- International Journal of Commerce, Business and Management, 3(2), 269-279

26. H Dierk. (2006). What Does Report Diversification do for Growth? An Economic Analysis. Applied Economics, 3(15), 25-38

27. Huang (2017). China"s 2017 Economic Prospects. Strategy, 21-25.

28. IMC (2012). India-China Trade Relation. IMC- Economic Research & Training Foundation, 2-7.

29. J Felipe, F.M Fisher (2003). Aggregation in Production Function: What Applies Economists should Know Metroeconomica, 54(2), 208-262.

30. Mohanty, S.K. (2014). India-China Bilateral Trade Relationship. Research and Information System (RIS) for Developing Courtiers, New Delhi. 39-42.

31. Ping Zheng (2009) A Comparison of FDI Determinants in China and India. Thunderbird International Business Review. 51, 263–279.

32. Rajan (2015). India-China Bilateral Economic Ties: Issues and Prospectus. South Asia Analysis Group, 1-5.

33. Ricardo Hausmann, César A. Hidalgo et al. (2014). The Atlas of Economic Complexity-Mapping Paths to Prosperity. Centre for International Development, Hardvard University Press, 124-130.

34. Saroj Kumar Mohanty (2012). Economic Growth, Exports and Domestic Demand in India: In Search of a New Paradigm of Development, Research and Information System for Developing Countries. 194, 10-15.